थिव्याः «illius utique excedit magnitudo coelum *et* terram».

c. वि alvum exonerare. विरिक्त qui alvum exoneravit. MAN. 5.144.

2. रिच् 1. et 10. *P.* (वियोजनसम्पर्कनयोः *K.*) relinquere; conjungere. रेचित relictus. RAGH. 6.7.

रिज् 1. *A.* frigere, assare. *Cf.* भृज्, भ्रस्ज्.

रिण्व् 1. *P.* (व्रजे, scribitur रिव्, gr. 110[a]) ire. *V.* रण्व्.

रिपु *m.* hostis. N. 6.93. Cf. radd. रिफ्, रिम्फ्.

रिप्स् v. रभ्.

रिफ् 6. *P.* (कत्थनयुद्धनिन्दाहिंसादानेषु *K.*) gloriari; pugnare; reprehendere; laedere, occidere; dare. *Cf.* रिम्फ्, ऋफ्, ऋम्फ्.

रिम्फ् 6. *P.* (वधे) ferire, occidere. *V.* रिफ्.

रिश् 6. *P.* (हिंसायाम्) ferire, laedere, occidere. *Cf.* रिष्.

रिष् 1. et 4. *P.* laedere, vulnerare, occidere. DR. 7.20.: अरिष्टदेहः. — *In dialecto Vêd. etiam cum productâ vocali.* RIGV. 36.15.: पाहि रीषतः «serva *nos* ab occisore».

रिह् 1. *P. in dialecto Vêd.* 1) colere, laudare (*cf.* अर्ह्). 2) rogare. 3) dare. *V.* Westerg. — *In dialecto Vêd. etiam* रिह् *cl.* 2. = लिह् *q.v.*

1. री 4. *A.* fluere. RIGV. 85.3.: वर्त्माण्य् एषाम् अनु रीयते घृतम् «in tramite eorum post *ipsos* manat aqua». *Cf.* रि, ऋ.

c. आ affluere, adire. RIGV. 30.2.

2. री 9. *P.* रिणामि (gr. 385.) ire. *V.* 1. री.

c. नि adoriri. RIGV. 61.13.: निरिणाति शत्रून्.

1. रु 2. *P.* रौमि, रवीमि (v. gr. 343.350.) sonare, strepere, murmurare, susurrare, clamare, vociferari, ululare, ejulare. HIT. 23.2.: कर्णे कलङ्क किमपि रौति; H. 1.25.: एते रुवन्ति (sic legendum pro ब्रुवन्ति) सारसा जलचारिणः; MAH. 1.3022.: न खल्व् अहम् इदं शून्ये रौमि; 3.11716.: रुवन्तश्च महारवान् ... राक्षसाः; 4.1463.: गोमायुर् एष ... रुवन्; MAN. 4.115.: श्वखरोष्ट्रे च रुवति ... न पठेद् द्विजः. — *Part. pass.* रुत personitus. MAH. 3.1535.: नद्यः ... पुंस्कोकिलरुताः. — रुत *n.* sonus, cantus *avium*, susurrus *apum*. Lass. 52.: पादपांश्चै 'व विहङ्गरुतह्लादितान्; Ritu-S. 1.5.: हंसरुत; BHATT. 2.10.: रुतानि षट्पदानाम्. — *Intens.* MAH. 1.7806.: शरणम् अभ्येमि रोरवीमि च दुःखिता; 2.2308.: द्रौपदी ... रोरवीति त्व् अनाथवत्. (Cf. रुद्; russ. *revu* rudo, rugio, Infin. *revje-tj*, ad Caus. रावयामि retulerim (v. gr. comp. 505.); fortasse etiam lith. *lóju* latro, fut. *ló-su*, et russ. *laju* latro, clamo (infin. *la-ja-tj*) ad Caus. radicis रु pertinent, mutato *r* in *l*; etiam lat. *rûmor* ad Caus. trahi potest, ita ut *â* debilitatum sit in *û* et *v* mutatum in *m*, sicut in *clamo* = Caus. श्रावयामि radicis श्रु q.v.; gr. *ὠ-ρύ-ο-μαι* cum Pottio ad रु praef. आ retulerim.

c. अभि *i.q. simpl. Part. pass.* अभिरुत personitus, circumsonitus. MAH. 3.1535.: नद्यः ... सारसाभिरुताः.

c. आ *i.q. simpl.* BHATT. 17.24.: वीरौ राघवाव् आरुताम्.

c. वि *id.* SA. 5.75.: एता घोरान् शिवा नादान् ... विरुवन्ति; UR. 67.14.; HIT. 55.22.

c. सम् *id.* BHATT. 17.71.: समरौद् इतरो जनः.

2. रु 1. *A.* (रोषे *K.* वधे गत्याम् *V.*) irasci; occidere; ire.

रुक्म *n.* (ut videtur, a r. रुच् e रुक्, servatâ primitivâ gutturali, sicut e.c. in वाक्य a वच् e वक्) aurum. HIT. 39.4.

रुक्ष *i.q.* रूक्ष.

1. रुच् 1. *A.* 1) lucere, splendere. RIGV. 6.1.: रोचन्ते रोचना दिवि «fulgent fulgores *ejus* in coelo; MAH. 1.6613.: रुरुचे सा 'धिकम् सुभ्रूर् आपतन्ती नभस्तलात् सौदामिनी 'व. 2) placere. HIT. 53.2.: यद् एव रोचते यस्मै भवेत् तत् तस्य सुन्दरम्; MAH. 1.7442.: न रोचते विग्रहो मे. — रुचित *n.* libitum, gratum. SA. 5.80.: रुचितं यदि ते; MAH. 1.7952.: यद् अस्य रुचितं कर्तुन् तत् कुरुध्वम्. 3) approbare, gaudere. MAH. 1.7444.: विग्रहं तैर् न रोचे. — *Caus. P. A.* 1) velle, cupere, appetere. MAN. 2.243.: यदि त्व् आत्यन्तिकं